

ANIL KUMAR

DEPARTMENT OF HISTORY
R.B.G.R. COLLEGE
MAHARAJGANJ (SIWAN)

(शेष भाग)

पुरापाषाण काल (पूर्व पाषाण काल) - Paleolithic Period

THURSDAY

फलक: जीविका के साधन और हथियार और औजार में भी वृद्धि और परिवर्तन आने लगे। बड़े और कम गंदे हुए हथियारों की जगह चमकीले और सुडौल पत्थर से हथियार और औजार बनने लगे। हस्त कुठार की जगह हस्त-क्लीपर और कोर हथियार की जगह फलक हथियार बनने लगे। नये हथियार और औजारों में बेधक (points), खुरचनी (scraper) और पाषाण बख्शी (points) बनने लगे। शिकार का क्षेत्र विकसित हुआ। मानव जीवन में शैश्विक विशेषताएं उभरने लगीं। मानव बेहतर शिकारी जीवन व्यतीत करने लगा। पशु चर्म वस्त्र के रूप में उपयोग होने लगा। अग्नि के उपयोग से इनका जीवन परिचित हुआ। प्राप्त उपकरणों की विशेषता यह है कि इनका निर्माण फलक तथा फलक ब्लेड पर हुआ है। फलक ब्लेडों के अधिकता के कारण मध्य पूर्व पाषाणिक संस्कृति को फलक संस्कृति कहा जाता है। निम्न प्राचीन पाषाण काल एवं मध्य प्राचीन पाषाण काल काल का तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि तत्कालीन मानव के तकनीकी ज्ञान में सुधार हुआ जिसके फलस्वरूप वे वातावरण से समंजस्य स्थापित करने के लिए उपकरणों में लाभ प्रद परिवर्तन किये।

इस संस्कृति का विकास महाराष्ट्र, तामिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश के दक्षिणी पठारी भाग, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात में पाया जाता है। इस प्रकार मध्य पुरा पाषाण काल भारत में पूर्वातिथसिक संस्कृति के आखेट युग का द्वितीय चरण था।

(3)

उच्च पूरा पाषाण काल — मध्य पूरा पाषाण काल के क्रमिक विकास ने उच्च पूरा पाषाण संस्कृति को जन्म दिया। इस काल का उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इस समय तकनीकी का इतना विकास हो गया था कि हर कार्य के लिए, विशेष रूप से, विभिन्न उपकरण, आवश्यकता अनुसार बनाये जाने लगे। इनमें तलपणी तथा गिरमित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उपकरणों के लिए उच्च श्रेणी के पत्थरों के अतिरिक्त हड्डी, हाथी दाँत तथा सींगों का भी प्रयोग किया जाता था। इसके अतिरिक्त हथके पर, बेथक, चन्द्रिका तथा पिछदक इत्यादि उपकरण इस क्षेत्र के प्रमुख उपकरणों में से हैं। क्वार्ट्ज पत्थर के हथियार औजार बनने लगे। फलतः हथियारों का कार्यांग मजबूत और तीक्ष्ण होने लगा। इस समय के उपकरणों में ब्लेड तल्व की प्रधानता दृष्टिगत होती है। ब्लेड सामान्यतः पतले एवं टूँकरे आकार के लगभग समान अंतर के पार्श्व वाले पत्थर के उनफलकों को कहा जाता है जिनकी लंबाई उनकी चौड़ाई से लगभग दोगुनी अधिक होती है। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले की मेजातहसील में बेलन घाटी के क्षेत्र में स्थित लोहदा नामक नाले के जमाव से अरिच निर्मित मातृदेवी की मुर्ति उपलब्ध हुई है जो इस काम में प्राप्त एकमात्र मुर्ति है। जिसे प्राचीन इतिहास के विद्वान 'हारपून' कहते हैं। बेलन घाटी से मिली हड्डी की नौकदार छद्म को सुई मानने पर यह संभावना बलवती होती है कि इस काल की औरतें सिलाई का काम

18

OCTOBER
THURSDAY

WEEK-42 291 074

OCTOBER

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31					

कही थी। फलतः उच्च पुरा पाषाण काल की मानव जीवन-पद्धति में भी कुछ विशिष्ट परिवर्तन हुये। शिकार सामूहिक जीवन का उद्भव बन गया। अग्नि के आविष्कार ने मानव जीवन को एक नया आयाम दिया। पशुचर्म का उपयोग बढ़ गया था। भारत में उच्च पुरा पाषाण संस्कृति ईसा से पूर्व 32000 वर्ष से लेकर ई.पू. 10000 के बीच लगभग रही थी। इस समय तक आते-जाते हिमयुग की समाप्ति हो चुकी थी।

इस संस्कृति के विकास का क्षेत्र मुख्यतः उत्तर प्रदेश, बिहार के पठारी क्षेत्र, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश के बेलन घाटी में फैला हुआ था क्योंकि उच्च पुरा पाषाण काल के सामग्री यहाँ से प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुये हैं।

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पश्चिमी यूरोप तथा पश्चिमी एशिया के उच्च पुरा पाषाणिक उपकरणों की भाँति, भारत में भी उच्च पुरा पाषाणिक संस्कृतियों का विकास स्थानीय पुरापाषाणिक उपकरण परम्पराओं से हुआ।

